अध्याय 26

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **उत्पत्ति 6:1-9:28**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़**) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (उत्पत्ति 6:1-9:28)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **पाप का स्वभाव : रोमियों 3:23**

याद करने वाले वचनों की तीसरी श्रृंखला "सुसमाचार" के विषय में है। पाँच याद करने वाले वचनों के शीर्षक हैं: पाप का स्वभाव, पाप का दण्ड, पाप का प्रायश्चित,उद्धार एक वरदान है तथा उद्धार विश्वास के द्वारा है!

क-ध्यान करना

रोमियों 3:21-23 पढ़ें। "परन्तु अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिए है। क्योंकि कुछ भेद नहीं; इसलिए कि सब ने पाप किया किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"।

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

पाप का स्वभाव रोमियों 3:23
इसलिए कि सब ने पाप किया किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं रोमियों 3:23

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1.बाइबल में पाप का अर्थ

पाप का अर्थ अपने लक्ष्य या उद्देश्य से भटक जाना है। बाइबल में इसका अभिप्राय परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते से है। पाप का अर्थ हमारे जीवन में परमेश्वर की योजना से भटक जाना है। परमेश्वर चाहते है कि लोग परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाकर रखें तथा जीवन में सही काम करें। लेकिन लागों का परमेश्वर, अन्य लोगों वरन् खुद अपने आप से सही सम्बन्ध न होने के कारण उन्हें बाइबल में पापी कहा जाता है! लोग परमेश्वर की दृष्टि में उचित काम नहीं कर पाते इस कारण, वे पापी कहलाते है। क्योंकि वे मानव जीवन में परमेश्वर के स्तर से कम रह जाते हैं इसलिए उन्हें पापी कहा जाता है।

जिन बातों को सांसारिक लोग सही मानते है वे बाते परमेश्वर के सिद्धान्तों के खिलाफ होती है। जिन कामों को संसार के नजरिये से अच्छा या भला काम कहा जाता है, वे परमेश्वर के स्तर पर अच्छे काम कहें जाने के बिल्कुल विपरीत हैं।

परमेश्वर की योजना व उसका स्तर बाइबल व यीशु के द्वारा प्रगट किया गया है। परमेश्वर का मानक सिद्ध है (याकूब 2:10)! किसी भी मनुष्य का जीवन सिद्ध नहीं है। रोमियों 3:23 कहता है "इसलिए कि सबने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये हं।" अत: जो लोग एक आदर्श जीवन व्यतीत करते तथा बहुत से भले कामों को करते हैं वे भी परमेश्वर की दृष्टि में पापी होते हैं। संसार के सारे लोग परमेश्वर की योजना या लक्ष्य से भटक जाते है, और परमेश्वर की तौल में कम ठहरते हैं।

पाप शब्द का अर्थ केवल परमेश्वर की नजरों में गलत ठहरने वाले कामों को करना ही नहीं, वरन् उन सही कामों को नहीं करना भी है जो बाइबल के काम से हम पर प्रगट किये गये है। पाप का अर्थ परमेश्वर के साथ गलत रिश्ता ही नहीं वरन् बाइबल में प्रगट परमेश्वर से कोई रिश्ता नहीं रखना भी हैं।

2.पाप की जड़ व पाप का फल

हमने कभी झूठ नहीं बोला, या कोई अपराध नहीं किया, कहने वाले लोग भी पापी कहलाते हैं, क्योंकि उन्होंने केवल पाप के फल को देखा है पाप की जड़ को नहीं।

पाप की जड़, स्वाधीनता या अपने आप में पर्याप्त होना है। यह परमेश्वर के साथ रहे रिश्ते को दर्शाता है। बहुत से लोग चोरी नहीं करते, झ्ठ नहीं बोलते या कोई अपराध नहीं करते, लेकिन उनका परमेश्वर के साथ कोई रिश्ता नहीं होता। वे अच्छा जीवन व्यतीत करने पर भी पापी कहलाते हैं, क्योंकि वे जीवन भर बाइबल में स्वयं को प्रगट करने वाले परमेश्वर से हमेशा दूर रहे ह। वे धार्मिक जीवन व्यतीत करने पर भी पापी कहलाते हैं, क्योंकि वे अपने ही धार्मिक विचारां व परम्पराओं के आधार पर जीवन व्यतीत करते हैं।

पाप की जड़ अपने जीवन में परमेश्वर की योजना से वंचित रह जाना और बाइबल में प्रगट परमेश्वर के सिद्धान्तों को छोड़ अपने ही सिद्धान्तों का निर्माण करना है। पाप की जड़, परमेश्वर द्वारा ठहराई सीमाओं से बाहर रहना या परमेश्वर द्वारा ठहराये नियमों के बिना ही जीवन व्यतीत करना है। पाप की जड़ बाइबल में प्रगट परमेश्वर की व्यवस्था से अलग व्यवस्थाओं व वैश्विक- दृष्टिकोणों पर विश्वास करना व मानना है।

पाप का फल पाप की जड़ से ही उत्पन्न होता है। पाप का फल, पाप की जड़ को प्रत्यक्ष, पकट व आकर्षक बनाता है। पाप का फल हर प्रकार के गलत काम करना तथा सही कामों को नज़रअन्दाज करना है। इसका अर्थ उन कामों को करना हैं, जिन्हें परमेश्वर न मना किया है तथा परमेश्वर द्वारा दी गयी आज्ञाओं को नहीं पूरा करना है। जिन बातों को परमेश्वर ने करने से मना किया है, मरकुस 7:20-23, रोमियों 1:28-32, गालातियों 5:19-21, तीतुस 3:3 तथा प्रकाशितवाक्य 21:8 में पायी जाती है। अत: पाप का अर्थ महज किसी भी प्रकार का गलत काम करना नहीं बल्कि बाइबल में प्रगट परमेश्वर क साथ रिश्ता तोड़ना है। जब मसीही लोग प्रचार करें तो वें लोगों की पाप की जड़ व फल दोनों को समझने में सहायता करें।

3.परमेश्वर की महिमा :

परमेश्वर की महिमा उसकी ईश्वरीय स्वभाव व उसकी उपस्थिति को व्यक्त करती है। परमेश्वर ने अपने स्वरूप में पहले आदमी तथा बाद में औरत को बनाया (उत्पत्ति 1:27) अर्थात उनमें परमेश्वर की विशेषताएँ पायी जाती है, जैसे जीवन, पवित्रता, प्रेम। लेकिन पाप में गिरने के बाद उन्होंने परमेश्वर की समानता को खो दिया, और अब उनमें परमेश्वर की विशेषताएँ नहीं पायी जाती है। बल्कि वे आत्मिक और शारीरिक रूप से मर गये (उत्पत्ति 3:19)वे अपवित्र व अधार्मिक थे (उत्पत्ति 6:5) वे प्रेम रहित बन गये (उत्पत्ति 4:8-9) और वे परमेश्वर से छुपने लगे (उत्पत्ति 3:8-10)।

रोमियों 3:23 का यही मतलब है। सारे लोग उस उद्देश्य से दूर हो गये है जो परमेश्वर ने उनके जीवन में निर्धारित किया था। जिसके परिणाम स्वरूप परमेश्वर के गुण उनसे दूर हो गये। उनके जीवन से परमेश्वर की ईश्वरीय विशेषताएँ तथा परमेश्वर की उपस्थिति दूर हो गयी। परमेश्वर ने मनुष्य को सदा अपने करीब रखने, उसे धर्मी ठहराने तथा उसे 100 प्रतिशत स्वीकार करने की योजना बनायी थी। परन्तु पाप करने के पश्चात्, कोई भी मनुष्य परमेश्वर के नज़दीक आने या ग्रहण किये जाने के

योग्य नहीं रहा। जिसके परिणाम स्वरूप सभी लोगों ने परमेश्वर की स्वीकृति खो दी, अब उन्हें परमेश्वर की ओर से प्रशंसा मिलने की बजाय दण्ड ही मिलता हैं।

साराशं- सारे लोगों की मासूमियत व सिद्धता छिन गयी है। उन्होंने परमेश्वर के विशेष व महिमित विशेषताओं को खो दिया जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने परमेश्वर की मंजूरी भी गंवा दी।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** पाप का स्वभाव: रोमियों 3:23
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]* **कलीसिया का सांस्कृतिक कर्तव्य: उत्पत्ति 1:24-2:25**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए उत्पत्ति1:24-2:25 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर उत्पत्ति1:24-2:25 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

उत्पत्ति 1:27

खोज1(परमेश्वर के स्वरूप में नर और नारी को रचना!

परमेश्वर ने नर व नारी को अपने स्वरूप में रचा! परमेश्वर के व्यक्तित्व को पहिचाने के लिए हमें पुरूष व स्त्री दोनों के विशेष गुणा को देखने की ज़रूरत है। मैं चौपाओ, पक्षियों, जानवरों व रेंगने वाले जन्तुआ में बिल्कुल अलग हूँ, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनाए गये थे। परमेश्वर के स्वरूप में रचे जाने के कारण, मुझमें भी वे सारे गुण व विशेषताएँ पायी जाती है जो परमेश्वर में हं। यह सच्चाई मुझे मेरे बारे में समझने, अपनी अद्भुत सृष्टि का आदर करने तथा अपने प्रति स्वस्थ नजरिये को रखने में सहायता करती है।

उत्पत्ति 1:28

खोज 2 (परमेश्वर की आशीष)

यह पहली घटना है जब परमेश्वर आदम और हव्वा से बातचीत करता है। परमेश्वर ने सृष्टि व जानवरों पर आशीषों को बोला, लेकिन परमेश्वर ने आदम और हव्वा से सीधे आशीषों को बोला! यह परमेश्वर द्वारा मनुष्यों पर प्रगट किया गया पहला

प्रकाशन था। इस प्रकाशन में परमेश्वर ने मनुष्यों के जीवन के लिए अपने उददेश्य व लक्ष्य को प्रदान किया। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि मनुष्य व जानवरों में बहुत बड़ा फरक है।

परमेश्वर ने मुझे एक विशेष मकसद के लिए बनाया है। मुझे परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनान लोगों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने तथा परमेश्वर द्वारा बनायी प्रकृति के प्रति जिम्मेदार रिश्ता बनाने के लिए रचा गया है। परमेश्वर को ध्यान में रखते हुए मुझे उसके स्वरूप होने के योग्य चाल चलना चाहिए। लोगों के सन्दर्भ में, मुझे पुरूष व स्त्री के बीच अन्तर का आदर करना चाहिए। प्रकृति के विषय में बोलें तो, मुझे सब चीजों को वश में रखना तथा उन पर राज्य करना चाहिए।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम उत्पत्ति1:24-2:25 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

प्रश्न1. उत्पत्ति 1 व उत्पत्ति 2 में आपस में क्या सम्बन्ध हैं?

ध्यान दे! उत्पत्ति इस कहानी का दूसरा संस्करण नहीं है अर्थात वह मूल कहानी से हटकर किसी दूसरे देश की दूसरी कहानी नहीं है, जैसा की बहुत से लोग विश्वास करते है। उत्पत्ति 2:4 क स्पष्ट रूप से बताता है कि जगत की सृष्टि सम्पन्न हो जाने की बाद ही इतिहास का आरम्भ हुआ था (उत्पत्ति 1:1-2:3)।

उत्पत्ति अध्याय 1

अधनिक जगत के शब्दों में बात करें तो उत्पत्ति 1 इतिहास नहीं था(क्योंकि समय केवल सृष्टि के चौथे दिन में ही बनाया गया था (उत्पत्ति 1:14)। उत्पत्ति 1 जगत की उत्पत्ति के सन्दर्भ में परमेश्वर का प्रकाशन था खास तौर पर धरती के विषय में। क्योंकि परमेश्वर ने सबसे अन्त में मनुष्य को बनाया था (उत्पत्ति 1:26-27)(जब परमेष्ठवर ने जगत की बाकि वस्तुओं को बनाया था उस समय स्त्री व पुरूष वहाँ नहीं थे। उसके बाद परमेश्वर ने मनुष्य पर यह प्रगट किया कि किसने इन सारी चीज़ों को बनाया है (उत्पत्ति 1:1) किसके लिए परमेश्वर ने इन सारी चीज़ों को बनाया (उत्पत्ति 1:14,26,29), तथा किस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने इन सारी चीज़ों को बनाया (उत्पत्ति 1:28)(यशायाह 43:7; कुलुसिस्यों 1:16)

उत्पत्ति अध्याय 2 व 3

अध्याय 2 विशेष तौर पर पुरूष की सृष्टि (उत्पत्ति 2:4-7), अदन की बाटिका (उत्पत्ति 2:8-17) तथा स्त्री की रचना का वर्णन करता है। उत्पत्ति अध्याय 3 पुरूष व स्त्री के पाप करने और उसके परिणाम स्वरूप उन्हें अदन की बाटिका से निकाले जाने की व्याख्या करता है।

उत्पत्ति 2:4-17

प्रश्न-2. पौधों व मनुष्य की सृष्टि का कालानुक्रंमित क्रम क्या था?

ध्यान दें - उत्पत्ति 1 बताता है कि परमेश्वर ने पहले पेड़ पौधो, फिर जानवर तथा बाद में नर व नारी को बनाया था, लेकिन उत्पत्ति अधयाय 2 में कुछ दूसरा ही क्रम दिखाई पड़ता है: सबसे पहले आदम की रचना, फिर पेड़ पौधों की सृष्टि व जानवर तथा सबसे अन्त में स्त्री की रचना। फिर अध्याय 1 व अधयाय 2 एक दूसरे के विरोधी नहीं वरन् एक दूसरे के पूरक हैं।

उत्पत्ति 2:4-7, मनुष्य की सृष्टि का वृत्तान्त

उत्पत्ति 2:4-7 मनुष्य के इतिहास का वर्णन करता है: मनुष्य की सृष्टि जो जमीन जोतेगा और फसल उत्पन्न होगी। यह पूरा अनुच्छेद कहता है, यह पूरा खण्ड कहता है कि जिस समय परमेश्वर ने पृथ्वो व आकाश को बनाया उसी समय आदमी को भी बनाया। मूल इब्रानी वाक्य काफी जटिल है, क्योंकि उसमें प्रारम्भिक उपवाक्य ज्यादा कोष्टको-युक्त उपवाक्य, तथा अन्तिम उपवाक्य दिया हुआ है।

इसका यर्थात अनुवाद निम्नलिखित है:-

पारम्भिकवाक्य (उत्पत्ति 2:4-5)। "जिस समय परमेश्वर ने पृथ्वी व आकाश की सष्टि की तब मैदान का कोई पौधा (और पेड़) नहीं उगा था, अर्थात इन वनस्पतियों के उत्पन्न होने से पहले, (क्योंकि)उस समय तक यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था और भूमि पर खेती करने के लिए मनुष्य भी नहीं था।"

कोष्टकयुक्त-उपवाक्य (उत्पत्ति 2:6) - "तौभी कुहरा (वाष्प) पृथ्वी से उठता था, जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी।"

अन्तिम उपवाक्य: (उत्पत्ति 2:7)- "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को (जो उस समय) मिट्टी या मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और आदम जीवित प्राणी बन गया।

इसका अभिप्राय निम्नलिखित हैं।

प्रारम्भिक वाक्यांशं - (उत्पत्ति 2:4-5), उत्पत्ति 1:6-10 के बाद की प्रारम्भिक परिस्थिति का वर्णन करती है। उस समय तक को पेड़, पौधे, जंगली पौध या लगाए पौधे अभी तक उत्पन्न नहीं हुए थे क्योंकि, अभी तक परमेश्वर ने पृथ्वी पर न तो मेंह बरसाया था और न हीं खेती करने या भूमी को जोतने के लिए मनुष्य की रचना हुई थी।

ज्यादा कोष्टकों वाला उपवाक्य - (उत्पत्ति 2:6) वर्णन करता है कि जब परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:11-13 में पेड़ पौधों की रचना की तब क्या हुआ। धरती पर पेड़ पौधों को उपजाने से पहले परमेश्वर ने धरती पर वाष्प उत्पन्न की ताकि भूमि को पेड़ पोधों के लिए अनुकूल बनाया जा सके। परमेश्वर ने भूमि को सींचने और बरसात के बादलों की रचना करने के लिए जमीन से ही वाष्प को ऊपर उठाया। अय्यूब 36:27 में लिखा है कि "वह तो जल की बूंदें ऊपर को खींच लेता है वे कुहरे से मेंह से मेंह होकर टपकती है।"

अन्तिम उपवाक्य- (उत्पत्ति 2:7) बताता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार उत्पत्ति 1:26-27 में आदम की रचना की। उसने आदम अर्थात "पुरूष" की मिट्टी से सृष्टि की और उसके नथनों में अपने श्वांस को फूँक दिया। और आदम एक जीवित व्यक्ति बन गया। मनुष्य का स्वभाव बहुत अनोखा था: उसका शरीर तो मिट्टी से रचे जाने के कारण भौतिक संसार से जुडा था, परन्तु उसका प्राण व आत्मा उसे परमेश्वर से प्राप्त हुआ, जिसकी वजह से मनुष्य में परमेश्वर का स्वरूप प्रगट हो सका।

उत्पत्ति 2:8-17 आदन का बाटिका का बनाया जाना

उत्पत्ति 2:8-17 - मानवीय इतिहास की आगे की कड़ियों को जोड़ता है। परमेश्वर पिता ने अदन की बाटिका में एक बगीचे को लगाया, जो इस प्रकाशन के आधार पर कही पूर्व दिशा की ओर स्थिर था। चार नदियों के स्थान के बारे में सुनिश्चित रूप में कुछ भी कह पाना मुमकिन नहीं है, क्योंकि सृष्टि के बाद से आयी कई प्राकृतिक आपदाओं ने (जैसे बाढ़) धरती के स्वरूप को काफी हद तक परिवर्तित कर दिया है।

उत्पत्ति 2:9 हमें सम्पूर्ण धरती पर मूल पेड़ों की उत्पत्ति के बारे में नहीं, वरन बाद में अदन की बाटिका के भीतर पेड़ों के बढ़ने के बारे में बताता है। उस बगीचे के मध्य में दो विशेष पेड़ थे। जीवन का वृक्ष केवल शारीरिक स्वास्थ्य बनाये रखने वाला नहीं, जैसा कि दूसरे पेड़ के फल करते हैं लेकिन वह खास तौर पर अनन्त जीवन प्रदान कर सकता था (उत्पत्ति 3:22)। भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष भले व बुरे को परखने की शक्ति प्रदान करता था (यशायाह 7:15-16)। आदम को इस फल को खाने के द्वारा नहीं वरन् बिना इस फल को खाये भले और बुरे का ज्ञान दिया गया था। परमेश्वर द्वारा आदम को इस वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा के ही कारण ही आदम को भले और बुरे की सही पहिचान प्राप्त थी : अर्थात उस वृक्ष

के फल से दूर रहना ही भला था, और उस वृक्ष के ऋल को खाना मृत्यु दण्ड योग्य बुराई। इसके अलावा कुछ बुरी शक्तियों के आक्रमण से बगीचे को बचाने से (उत्पत्ति 2:15) आदम को भले और बुरे का ज्ञान प्राप्त हुआ : अर्थात बगीचे की रक्षा करना अच्छा है, लेकिन बुरी शक्तियों से सावधान न रहना बुराई है।

परमेश्वर ने आदम को बगीचे में काम करने या बगीचे में खेती करने तथा बगीचे की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी थी (उत्पत्ति 2:15-17)। सिद्ध सृष्टि (उत्पत्ति1:31) में परमेश्वर के अहम काम और उन्हें इस धारतो पर कार्यान्वित करना शामिल था (उत्पत्ति 1:28)। आदम को बुरी शक्तियों से भी उस बगीचे की सुरक्षा करनी थी, जो उत्पत्ति 3:1 में जाकर ही प्रत्यक्ष रूप में सामने आयी।

निष्कर्ष : अधयाय 1व 2 हमें बताते हैं कि पेड़, पौधाों को नर और नारी की सृष्टि से पहले बनाया गया था।

उत्पत्ति 2:18-25

प्रश्न 3- जानवरों व मनुष्य की सृष्टि का कालानुकृमित क्रम क्या था?

ध्यान दें! उत्पत्ति 2:18-25 लगातार मानवीय कड़ियों को आगे जोड़ती है: स्त्री की रचना। उत्पत्ति 1:20-27 स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि पुरूष व स्त्री की रचना से पहले पक्षी व पशुओं के रचना हो चुकी थी। उत्पत्ति 1:26-27 आदम और हव्वा की सृष्टि का संक्षिप्त वर्णन है जो इस बात की जानकारी प्रदान नहीं करता कि पुरूष व स्त्री की रचना के बीच में कितने समय का अन्तराल रहा। उत्पत्ति अधयाय 2 में स्पष्ट बताता है कि पुरूष की सृष्टि के काफी समय के बाद स्त्री को बनाया गया था।

उत्पत्ति 2:19 जानवरों के बाद पुरूष (मनुष्य) का बनाया जाना।

उत्पत्ति 2:19 हमें यह नहीं बताता कि परमेश्वर को पहले पुरूष के लिए कोई उचित साथी नहीं मिला। कई लोग उत्पत्ति से बताते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाने के बाद जानवरों व पक्षियों को बनाया था। वे ऐसा भी सिखाते है कि परमेश्वर जानवरों व पक्षियों में से मनुष्य के लिए उचित साथी खोजने में असफल था इसलिए परमेश्वर ने पुरूष के लिए एक योग्य व उचित साथी की रचना की। वे कहते हैं कि आदम जानवरों व पक्षियों के बीच में रहा और उसी ने उन सभी को नाम दिया, लेकिन परमेश्वर उनके बीच में मनुष्य के लिए कोई उचित जोड़ा न ढूढ़ सका। यह विचार सत्य नहीं है(क्योंकि जो परमेश्वर उत्पत्ति 2:7 में पुरूष को बना सकता था उसी ने आसानी से उत्पत्ति 2:21-22 में स्त्री को भी बनाया।

उत्पत्ति 2:18-20 आदम ने जानवरों के नाम रखे।

उत्पत्ति 2:18-20 हमें यह बताता है कि पहले परमेश्वर ने पुरूष के मन में उचित सहायक के साथ रहने की जिज्ञासा उत्पन्न की। परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:19-22 में स्त्री को बनाने से पहले उत्पत्ति 1:26 में एक परिचय वाक्य कहा जैसा कि उसने उत्पत्ति 1:27 में आदम और हव्वा को बनाने से पहले उत्पत्ति 1:26 में प्रारम्भिक वाक्य कहा था। उत्पत्ति 2:19 में इब्रानी क्रिया का सबसे बेहतर अनुवाद सुनिश्चित भूतकाल वाक्य में है: परमेश्वर ने उसे रचा था। उत्पत्ति 2:19 का सही अनुवाद है, "और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं और आकाश के पक्षियों को रचकर (जिन्हें परमेश्वर ने आदम से पहले बनाया था), आदम के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता हैं, और जिस जिस प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।" अत: पक्षिओं (उत्पत्ति 1:20-23) व जानवरों (उत्पत्ति 1:24-25) की रचना करने के बाद, परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:26-27)और उन सारे जानवरों व पक्षियों की आदम के पास ले आया कि वह उनके नाम रखे (उत्पत्ति 2:19-20)।

उन्हें नाम देने के द्वारा, मनुष्य ने यह प्रगट किया कि वह प्रत्येक जानवर व पक्षी के चरित्र व स्वभाव को जानता है जानवरों के साथ रहने व उनकी हरकतों पर गौर करने से मनुष्य को वास्तव में यह एहसास हो गया था कि वह बाकि की सृष्टि से बिल्कुल अलग है। उत्पत्ति 2:20 में वाक्य किया गया भाव "परन्तु आदम से मेल खाने वाला कोई सहायक नहीं मिला" इब्रानी भाषा में कहें जाने का तरीका है कि "आदम को अपने समान कोई साथी नहीं मिला।" परमेश्वर नही, वरन् मनुष्य अपने लिए उचित सहायक खोजने में असफल रहा। परमेष्ठवर ने तो आदम के मन में संगति करने की जिज्ञासा उत्पन्न की थी। जिसे

केवल स्त्री ही पूरा कर सकती थी। पक्षी या जानवर मानव की यह इच्छा को सन्तुष्ट नहीं कर सकते थे। केवल पुरूष की समानता में रची गयी सृष्टि ही उसे सन्तुष्ट कर सकती थी। अत: उत्पत्ति 2:21-22 में परमेश्वर ने आदम की पसली से हव्वा या स्त्री को बनाया ताकि वह उत्पत्ति 2:23-24 के भेद को प्रगट कर सके। स्त्री पूरी तरह पुरूष की समानता में थी, क्योंकि उसे पुरूष की सहायक होने के लिए पुरूष की पसली से बनाया गया था। वह पुरूष के पैर की हड्डी से नहीं बनाई गयी ताकि पुरूष उस पर प्रभुता न करे और नहीं उसे सिर की हड्डी से बनाया, कहीं ऐसा न हो कि स्त्री खुद पुरूष पर हुकुम चलाए।

निष्कर्ष : अध्याय 1 व 2 दोनों ही अध्याय हमें बताते हं कि आदम की सृष्टि से पहले जानवरों का बनाया गया था।

उत्पत्ति 1:26-29; 2:27

प्रश्न 4: कौन सी बात मनुष्य को बाकि सृष्टियों से भिन्न ठहराती है?

नोट! मनुष्य को बाकि अन्य सृष्टियों से अलग बनाया गया है।

मानवीय शरीर।

उत्पत्ति 2:7 में लिखा है कि परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी लेकर मनुष्य को रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। पशुओं को परमेश्वर ने अपनी आज्ञा देकर बनाया। मनुष्य को परमेश्वर ने अपने हाथों से बनाया और उसमें अपना प्राण फूँक दिया। इससे यह जाहिर होता है कि मनुष्य एक विशेष प्राणी हैं और उसके मंजिल भी विशेष है।

मानव आत्मा - उत्पत्ति 1:26-27 में लिखा है कि परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री को अपने स्वरूप व अपनी समानता में बनाया। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि परमेश्वर ने उन्हें अपने समान ईश्वरीय स्वभाव प्रदान किया। उन्हें एक आत्मिक स्वभाव प्रदान किया गया है जो परमेश्वर के आत्मिक स्वभाव से मेल रखता है। लोगों में परमेश्वर की मूल विशेषताएँ पायी जाती हैं। परमेश्वर के व्यक्तिगत की नकल होने के कारण मनुष्य अलग श्रेणी मं आता है। इस तरह से मनुष्य, सम्पूर्ण सृष्टि में सबसे अनोखा जीव है। सम्पूर्ण सृष्टि में पुरूष व स्त्री को छोड़कर और कोई भी परमेश्वर के स्वरूप को धारण नहीं करता है।

मानव का परमेश्वर के साथ सम्बन्ध

उत्पत्ति 1:28-29. में लिखा है कि परमेश्वर ने सीध पुरूष व स्त्री से बातचीत की। यह पहली बार था जब परमेश्वर ने मनुष्य से बातचीत की। लोगों के लिए यह परमेश्वर का सवप्रर्थम प्रकाशन था। इसके मतलब मनुष्य में परमेश्वर को जानने व उससे बात करने की योग्यता थी। इसके अलावा परमेश्वर ने पुरूष व स्त्री को धरती पर फलने फूलने, और सारे जीवित प्राणीयों और वनस्पति को इस्तेमाल करने का अधिकार दिया। इसके द्वारा परमेश्वर ने जाहिर किया कि उसने धरती को मनुष्यों के लिए बनाया है और उसने मनुष्य को अपनी सृष्टि का रखवाला ठहराया (उत्पत्ति 2:15)।

साराशं! मनुष्य का आत्मिक व शरीरिक अस्तित्व है(अर्थात, उनके पास देह और आत्मा दोनों है। केवल मनुष्य ही सोच विचार कर सकता है(अर्थात मनुष्य में विवेक है, जिससे वह गलत व सही की पहिचान कर सकता, उसमें अन्तर्बोध है जो बिना महसूस कर सकता, बनाने या रचने की क्षमता तथा जिसमें परमेश्वर को जानने तथा परमेश्वर से बात करने की योग्यता होती है।

उत्पत्ति 2:24

प्रश्न 5. क्या विवाह मनुष्यों की प्रथा है या परमेश्वर का संस्थापन?

ध्यान दें। विवाह परमेश्वर की ओर से संस्कृतिक संस्थापन है।

विवाह परमेश्वर का विचार व संस्थापन है।

उत्पत्ति 1 व 2 में परमेश्वर ने पुरूष के भीतर एक जीवन साथी की जिज्ञासा को उत्पन्न किया तथा बाद में उसने नर के लिए नारी बनाने की पहल की। इसके बाद परमेश्वर विवाह का रिश्ता बनाने का भी काम किया। मनुष्य के पाप में गिरने से पहले ही परमेश्वर विवाह के सम्बन्ध की स्थापना कर चुके थे, जो एक विशष माँग। के साथ एक विशेष रिश्ता था।

- विवाह के बाद पुरूष व स्त्री अपने माता पिता को छोड़कर अलग रहेंगे!
- विवाह का सम्बन्ध एक पुरूष व एक स्त्री के बोच में स्थापित होता है, जिस रिश्ते के अर्न्तगत पति अपनी पत्नी (एक पत्नी) के साथ इस तरह रहेगा की उसे कोई अलग न कर साक (मत्ती 19:5-6; इफिसियों 5:31-33)!
- यौन सम्बन्ध तीन तरीकों में सीमित किया गया है: वह विवाहित पती व पत्नि के बीच ही हो, यौन सम्बन्ध विवाह के उपरान्त ही स्थापित हो, और यह सम्बन्ध विवाह के अन्तर्गत ही स्थापित किया जाए (इब्रानियों 13:4)!

परमेश्वर ने विवाह से जुड़े नियमों को मानव जाति के पाप में पड़ने पर भी बरकरार रखा।

मत्ती 19 में यीशु मसीह तथा इफिसियों 5 में पौलुस ने विवाह संस्थापन की बात इस मनसा से की ताकि उससे जुड़े सारे मूल सिद्धान्तों के सम्पूर्ण धरती पर स्वीकार किया जाए।

उत्पत्ति 1:28

प्रश्न 6. क्या लोगों की जनसंख्या बिना किसी रूकावट के लगातार बढ़ती रहनी चाहिए?

ध्यान दें। धरती पर लोगों की गिनती बढ़ाने का लक्ष्य (मकसद)

पतन से पहले

ध्यान दें कि यह आदेश उत्पत्ति 1:26-27 जो कहता है, "परमेष्ठवर ने नर व नारी को अपने स्वरूप में बनाया" तथा उत्पत्ति 3 के पहले दिया गया था, जो बताता है कि पुरूष व स्त्री किस प्रकार से पाप में गिर गये। अत: उत्पत्ति 1:28 में प्राप्त आदेश को सही तरह से समझने की आवश्यकता है। परमेश्वर की मूल इच्छा थी कि पृथ्वी लोगों से भर जाए जो पाप में पड़ने से पहले परमेश्वर के स्वरूप में पाये जाते थे। पृथ्वी को ऐसे लोगों से भारन की योजना बनाई गयी थी जो उस (परमेश्वर) को जानते थे, उसे प्रेम करते, उसके साथ चलते तथा उसके महिमा करते थे। पृथ्वी ऐसे लोगों द्वारा भरने के लिए नियोजित की गयी थो, जो परमेश्वर के समान सच्ची धार्मिकता व पवित्रता को धारण करते हों (इफिसियों 4:24)।

पतन के पश्चात- लेकिन पतन के बाद, मैं उत्पत्ति 5:1-2 में पढ़ता हूँ कि, आदम के एक पुत्रा उत्पन्न हुआ जो उसके अपने स्वरूप में था। मनुष्य के पतन के पश्चात् से पृथ्वी ऐसे लोगों से भर रही है, जिनमें पहले के समान परमेश्वर की समानता नहीं है। इसके बावजूद भी परमेश्वर की मूल योजना नहीं बदली। परमेश्वर अब भी लोगों द्वारा इस धारती को भरना चाहता है परमेश्वर के स्वरूप को धाारण करते ह (उत्पत्ति 9:1)। यीशु मसीह के उद्धार के निमित्त कार्यो के द्वारा, लोग नई सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरिन्थियोां 5:17; इफिसियों 4:20-24)। अत: जब मसोही लोग धारती पर जनसंख्या - वृद्धि, जन्म दर पर नियन्त्रण या सवाल पर ध्यान करते है कि परिवार में कितने बच्चे हाने चाहिए, तो उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि परमश्वर का उद्देश्य धरती को किसी भी प्रकार के लोगों से भरने का नहीं था वरन् उसके स्वरूप में पाये जाने वाले लागों से भरने का था।

अत: सामान्यत: परमेश्वर ने पुरूष व स्त्री को बच्चे पैदा करने का चुनाव, योग्यता तथा ज़िम्मेदारी दी है। लेकिन परमेश्वर ने स्त्री व पुरूष को यह भी ज़िम्मेदारी दी है कि वे धरती को ऐसे लोगों से भरे जिनमें बाइबल के परमेश्वर के समान धार्मिकता व पवित्रता पायी जाती हो।

उत्पत्ति 1:28

प्रश्न 7- लोग पृथ्वी को अपने वश में करने का काम किस प्रकार पूरा करते हैं?

ध्यान दें- लक्ष्य, धरती का परमेश्वर के लिए प्रबन्ध करना है।

(1) "वश में करना " शब्द का अर्थ, जीतना, लगाम पकड़ना, समतल करना या दबाना होता है।

अत: स्त्री व पुरूष का लक्ष्य या उनकी मंजिल परमेश्वर की सृष्टि के अशिष्ट क्षेत्रों में शिष्टाचार लाना है। उन्हें उजाड़ स्थानों को निवास स्थान बनाना है, उन्हें बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि बनाना तथा जंगली जनवरों को लगाम लगाकर घरेलू कामों के लिए इस्तेमाल करना है। उन्हें सृष्टि के प्राकृतिक नियमों का पता लगाना है, अर्थात जगत मं प्राप्त ज़िम्मेदार विज्ञान का इस्तेमाल करना है और लागों के भलाई के लिए शारीरिक (भौतिक) व रासायनिक नियमों का इस्तेमाल करना है। लेकिन, विज्ञान कृषि विज्ञान व उधाोग का इस्तेमाल असीमित नहीं है।

(2) वश में करने का अर्थ संरक्षण करना भी होता है।

अत: पुरूष व स्त्री के जीवन का लक्ष्य परमेश्वर की सृष्टि का गलत इस्तेमाल होने, शोषण तथा नाश होने से बचाना है। परमेश्वर द्वारा जमीनी तत्वों का सीमित इस्तेमाल करने की अनुमति दी गई है। लोग धरती से प्राप्त तत्वों का इस्तेमाल अपने फायदे या धरती पर रहने वाले दूसरे लोगों को नाश करने के लिए न करने पाएं। लोग पानी, हवा तथा भूमि को प्रदूषित करके परमेश्वर द्वारा बनाई सृष्टि का इस तरह से शोषण न कर सकें जिससे परमेश्वर द्वारा ठहराया गया प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ जाए तथा पेड़, पौधां, जानवर तथा धरती पर मानव जाति का नाश हो जाए। लोग धरती से प्राप्त स्रोतों को व्यर्थ न करें जिससे पृथ्वो पर अकाल या गरीबी न हो। प्रकाशितवाक्य 11:18 में परमेश्वर धारती को नाश करने वाले सयुंक्त राष्ट्रों सत्ताधाारियों तथा सैन्य शक्तियों को चेतावनी देता है, कि समय आने पर परमेश्वर उन्हें नाश करेगा।

(3) वश में करने का अर्थ पृथ्वी के सारे लोगों को बाइबल या मसीही ज्ञान पहुचाना भी है।

किसी भी देश की संस्कति उनका दृष्टिकोण, सच्चाई, विश्वास अन्धाविश्वास या मूल्य होती है जो उनकी विचारधाराओं, अनुभवों, व्यवहार, रिश्तों तथा अनुसंधानों (रीति, रिवाजों) में प्रगट होते हैं। मानव जाति के पाप में गिरने के पश्चात् सारे संसार की संस्कृति जीवित परमेश्वर व उसके ठहराये नियमों से दूर होते चले गये हैं। वर्षों से, लोगों ने जीवित परमेश्वर के बिना ही जीवन व्यतीत किया और पाप को अपने आचरण व संस्कृति का भाग बनने दिया है। परमेश्वर की इच्छा न केवल लोगों को बदलने की हैं, परन्तु वह लोगों की संस्कृति व आचरण को भी बदलना चाहता है। परमेश्वर विशेष गुणों के साथ विशेष प्रकार के लोगों को बनाना चाहते हैं, जिसे राज्य की संस्कृति या धारती पर परमेश्वर के राज्य का तौर-तरीका कहा जाता है। क्योंकि मानवीय आचरण, बाइबल में प्राप्त परमेश्वर के प्रकाशन का ही परिणाम है, बाइबल की ज़्यादातर शिक्षाएं सीधे तौर पर लोगों की जीवन शैली/संस्कृति को बदलने के लिए है।

उत्पत्ति 1:28

प्रश्न 8. लोग किस प्रकार से पृथ्वी पर अधिकार करने में सफल हो पाते हैं?

(1) "अधिकार करने" का वास्तविक अर्थ किसी वस्तु पर राज्य करना, या किसी को अधोन करना होता है।

इस तरह से पुरूष व स्त्री का कर्त्तव्य परमेश्वर द्वारा बनाये गये आकाश के पक्षियों, धारती पर जानवरों व समुन्द्र के जलचरों को नियन्त्रि करना है। उदाहरण के लिए, नीतिवचन 12:10 में हम पढ़ते हं, कि "धर्मी मनुष्य अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है"। अत: एक मसीही को कभी जानवरों के प्रति क्रूर नहीं होना चाहिए, परन्त उसे अपने पालतू जानवरों की अच्छी देखभाल करनी चाहिए। इसी प्रकार मसीहियों को सम्पूर्ण जगत की सृष्टि की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए।

(2) मनुष्य का कर्त्तव्य लोगों के फायदे के लिए जानवरों, मछली व पक्षियों का इस्तेमाल करना चाहिए।

लोगों को, फायदा पहंचाने के लिए बुद्धिमानी व उन्नत विचारों के साथ उन पर अधिकार करना चाहिए। मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, परमेश्वर ने सारे बीज व फल उत्पन्न करने वाले पेड़ पौधों को मनुष्य का भोजन होने के लिए दे दिया था। फिर भी मनुष्य के पाप में गिरने तथा जलप्रलय के द्वारा संसार के नाश हो जाने के बाद, परमेश्वर ने आकाश के पक्षियों जमीन के चौपायों सब मछलियों को भी मनुष्य का भोजन होने के लिए दे दिया। हम उत्पत्ति 9:3 में पढ़ते है, "सब चलने वाले जन्तु तुम्हारा आहार होगें; जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिये थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूँ।"

(3)प्रभुता करने का अधिकार केवल जानवर, मछलियों व पक्षियों तक ही सीमित है।

मनुष्य को दूसरे मनुष्य पर प्रभुता करने का अधिकार नहीं दिया गया है। इसका अर्थ है कि कुछ लोग दूसरे लोगों पर मनमाने ढंग से हुक्म नहीं चला सकते उन्हें दबा, गुलाम नहीं बना सकते या उनकी हत्या नहीं कर सकते, तथा अपने लोगों या

परदेशियों को सता नहीं सकते हैं। परमेश्वर ने हर देश व जाति के जीने हेतू समय व स्थान निर्धारित किया है (प्रेरितों के काम 17:26-27)। लेकिन धरती व उसमें पाये जाने वाले तत्व आज भी बाइबल के परमेश्वर के नियन्त्रण में हैं (भजन संहिता 24:1) और किसी भी देश को धरती के किसी भी भ्-खण्ड पर अपना दावा करने का अधिकार नहीं है। लोग केवल परमेश्वर की सम्पत्ति के रखवाले हैं।

(4)क्या मसीही लोग सत्ताधारी अधिकारियों में शामिल हो सकते है?

पुराने नियम में, यहूदा के राजा दाऊद जैसे लोगों को छोड़कर, मूसा, यूसुफ, दानिय्येल, नहेम्याह सभी, मिस्र, बेबीलोन तथा फारस जैसे देशों में बढ़े ऊँचे पदों पर आधीन थे। उनका सभी लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव था। नये नियम में निकेदमुस राज्य करने वाले यहूदी समाज का एक प्रमुख अधिकारी था। लूका 7 व प्रेरितों 10 में, देखते है कि एक रोमी सेनापति व अधिाकारी मसीही बन जाता है। प्रेरितों 8 में, कूश देश का प्रमुख अधिकारी मसीही बन गया। प्रेरितों 13 में साइप्रस का एक सरदार मसीही बन गया। प्रेरितों 17 में, ऐथेन्स परिषद का एक सदस्य मसीही बन गया।

प्रभु यीशु समाज के सारे हिस्सां से लोगों का उद्धार करने के लिए आए। जिसमें अधिकारीगण भी शामिल थे। जब ऊँचे पद के लोग मसीही बनते ह, तो वे अपने पदों पर और ज्यादा प्रभावशाली हो सकते हैं। तीमुथियुस 2:1-4, में मसीहियों से सब प्रकार के लोगां के लिए प्रार्थना करने को कहा गया है(लेकिन उसमें खास तार से "राजाओं और अधिकारियों के लिए प्रार्थना करने को कहा गया है," क्योंकि परमेश्वर चाहते है कि सच्चाई जानने के बाद उनका भी उद्धार हो जाए। इसलिए मसीहियों से उनके देश के अधिकारियों के लिए प्रार्थना करने का आगृह किया जाता है। यीशु ने कहा कि प्रेरित जन बड़े बड अधिकारियों के सामने गवाह ठहरेंगे (मत्ती 10:17-20; प्रेरितों 23:11; 1 पतरस 2:15)।

(5) अधिकार करने का दायरा धरती से बाहर निकलकर दूसरे तारागणो तक नहीं जाता है।

लोगों को अंतिरिक्ष के भेदों का खुलासा करने में अपने पैसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए, जबकि अभी भी धरती पर बहुत से लोग भूख और गरीबी से मर रहे हैं।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम उत्पत्ति 1:24-2:25 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. उत्पत्ति 1:24-2:25 से कुछ सम्भावित प्रयोगों के उदहारण ।

उत्पत्ति 1:27- हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि परमेश्वर ने आपको इस धरती पर उसके स्वरूप को प्रगट करने लिए बनाया है।

उत्पत्ति 1:28- सक्रियता के साथ ऐसे लोगों द्वारा धरती को भरने में लगे रहें, जिनमें परमेश्वर का स्वरूप पाया जाता हो। अपने व दूसरों के बच्चों को यीशु मसीह के बारे में बताएं ताकि वे परमेश्वर के स्वरूप व समानता का प्राप्त कर सके।

उत्पत्ति 1:28- विधार्थी होने के नाते, परमेश्वर की सृष्टि में प्राकृतिक नियमों की खोज करें, व्यवहारिक विज्ञान का अभ्यास करे तथा लोगों की भलाई के लिए भौतिक व रासायनिक नियमों का इस्तेमाल करें।

उत्पत्ति 1:28- गलत इस्तेमाल, शोषण व नाश होने से परमेश्वर की सृष्टि की रक्षा करें।

उत्पत्ति 1:28- संसार के सारे लोगों को बाइबल या मसीही संस्कृति के बारे में बताएं।

उत्पत्ति 1:28- लोगों की भलाई को ध्यान में रखते हुए पक्षियों, जानवरों, मछलियों तथा धारती के अन्य तत्वों के लिए बुद्धिमानी के व अनत निर्णय लें।

उत्पत्ति 1:28- यदि कोई मसीही जन ऊँचे पद पर आसीन हो तों, होने दें कि जितना सम्भव हो वह समाज पर अपना अच्छा प्रभाव बनाए रखें।

2- उत्पत्ति 1:24 से 2:25 में व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल करने वाली बातों का उदाहरण। मेरे पास मसीहियों के लिए परमेश्वर की संस्कृति को बेहतर तरह से समझ पाया हूँ। मसीही ज़िम्मेदारियों का एक हिस्सा परमेश्वर की सृष्टि की सुरक्षा करना है। इसलिए हम मसीहियों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- हमें प्रकृति का नाश करने तथा पर्यावरण के सन्तुलन को बिगाड़ने से बचाना चाहिए। उदाहरण के लिए, धरती से ओजोन सतह को नाश करने से बचना, वर्षा के मूल कारण जगंल को काटने से बचना चरागाहों की अधिकता तथा उपभोक्ता-श्रेणी में से कुछ जानवरों को मारना।
- संसार के प्रदूषण को रोकना। उदाहरण के लिए, जहरीले तथा कारखानों से निकलने वाले गन्दे पानी को नदी व नालों से मिलाकर जल प्रद्षण करने से रोकना, परिवहन व उद्योगों की अधिकता से वायु प्रदूषण रोकना तथा ध्वनि प्रदूषण रोकना।
- कृषि जगत में हानिकारक पदार्थों का इस्तेमाल करने में रोक। उदाहरण के लिए, भोजन के तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले पशुओं को जल्दी वृद्धि कराने के लिए होर्मोन्स के इंजेक्शन न दें भोजन वस्तुओं को सुरक्षित करने के लिए हानिकारक तत्वों तथा भोजन वस्तु में रंग का इस्तेमाल न करें और नहीं दवाइयों का इस्तेमाल करके सब्जियों के आकार को न बदलें।
- औधोगिक जगत में हानिकारक चीजों का इस्तेमाल करने से बचं! उदाहरण के लिए, जैविक या रासायनिक युद्ध करने के लिए परमाणु बमों का निर्माण न करें।
- चिकित्सा जगत में हानिकारक चीजों का इस्तेमाल करने से बचें। उदाहरण के लिए, अनचाहे बच्चे का गर्भपात न करें, दया मृत्यु न दें तथा जेनेटिक इंनजीनियरिंग द्वारा मानवीय ताकत या आकार को न बढ़ाएं।

मैं ऐसा मानता हूँ कि जो संस्कृतिक ज़िम्मेदारियाँ परमेश्वर ने कलीसिया के हाथ में सांपी हैं, वे केवल प्राकृतिक मुद्दों तक ही सीमित नहीं है। ज़रूरत पड़ने पर इसमें, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा आत्मिक मुद्दों को भी शामिल किया जा सकता है।

- नकारात्मक रूप! मसीहियों को झूठ, अश्लीलता, तथा उपद्रव जैसी बातों से लड़ना चाहिए, जिनका प्रसार पत्रिकाओं, टेलीविजन तथा दिखावटी व्यापार के द्वारा बहुतायत से होता है। उन्हें गर्भपात तथा समलैंगिकता को वैध करने के विरूद्ध खड़ा होना चाहिए तथा जातिवाद व भ्रष्टाचार का सामना करना चाहिए। उन्हें जुआ, लौटरी तथा इस प्रकार के सटटेबाजो का विरोध करना चाहिए, जो बहुत से लोगों को अपना गुलाम बना लेता है। उन्हें नशीले पदार्थों के उत्पादन, वितरण तथा सेवन का विरोध करना चाहिए।
- सकारात्मक रूप में, मसीहियों को अभक्ति अविश्वास को मसीही विश्वास का फैलाने के द्वारा दबा देना या वश में कर लेना चाहिए। उन्हें शिष्यों के निर्माण करने के द्वारा अपरिपक्वता व फलहीनता को वश में कर लेना चाहिए। उन्हें सामाजिक बुराईयों तथा अईश्वरीय कामों को मिटाने में शामिल होना चाहिए। उन्हें अस्पताल, वृद्ध शैक्षिक प्रशिक्षण केन्द्र तथा सुधाार केन्द्र जैसे संस्थान खोलने चाहिए, जहाँ पर ईश्वरीय-विरोधी विचार नहीं वरन् सच्ची मसीही सिद्धान्तों पर काम हो। उन्हें लोगों को सलाह देनी और लोगों के टूटे जीवनों में चंगाई देने में सहायता करनी चाहिए। कलीसिया की सांस्कृतिक ज़िम्मेदारी, सभी मनुष्यों, सृष्टि के हर क्षेत्र तथा मानवीय जीवन के हर हिस्से से सम्बन्ध रखती है।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें उत्पत्ति 1:24-2:25 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ उत्पत्ति 1:24-2:25 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति 12:1-15:21 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। पाप का स्वभाव: रोमियों 3:23 । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।